<u>तत्काल प्रसारण के लिए</u>

14वीं ऐन्युअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट 2019 'अर्ली इयर्स' जारी

नई दिल्ली, 14 जनवरी 2020

देश में बच्चों की शिक्षा की दशा-दिशा का जायज़ा लेने वाली प्रतिष्ठित वार्षिक सर्वेक्षण रिपोर्ट – असर 2019 'अर्ली इयर्स' आज जारी हो गई | 2005 से प्रति वर्ष, असर ने ग्रामीण भारत के 3-16 आयु वर्ग के बच्चों के विद्यालय में नामांकन की स्थिति और 5-16 आयु वर्ग के बच्चों की बुनियादी पढ़ने और गणित करने की क्षमता पर रिपोर्ट जारी की है | दस वर्ष यह वार्षिक रिपोर्ट तैयार करने के बाद, असर ने 2016 में एक वैकल्पिक-वर्ष चक्र अपनाया, जहाँ यह 'बेसिक' असर हर दूसरे वर्ष (2016, 2018 और 2020 में अगला) आयोजित किया जाता है; और वैकल्पिक वर्षों में असर बच्चों की स्कूली शिक्षा और सीखने के एक अलग पहलू पर केंद्रित होता है | 2017 में, असर 'बियॉन्ड बेसिक्स' सर्वेक्षण 14-18 आयु वर्ग के युवाओं और युवतियों की क्षमताओं, अनुभवों और आकांक्षाओं पर केंद्रित था |

2019 में असर 'अर्ली इयर्स' छोटे बच्चों पर केंद्रित है | इसमें 4-8 आयु वर्ग के बच्चों के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय में नामांकन और कुछ महत्वपूर्ण विकासात्मक संकेतकों पर बच्चों की क्षमताओं पर जानकारी एकत्रित की गई है |

विश्वस्तर पर 'अर्ली इयर्स' (0-8 आयु वर्ग) मानवों के विकास जैसे संज्ञानात्मक विकास, शारीरिक विकास और सामाजिक और भावनात्मक विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना गया है | दुनिया भर में किए गए अनुसंधान यह बताते हैं की छोटे बच्चों के उपर्युक्त विकास के लिए प्रारंभिक वर्षों में यदि उनको विकासअनुकूल वातावरण और उपयुकत संसाधन मिलें तो बच्चों को आगे विद्यालय और दैनिक जीवन में बहुत लाभ होता है | परन्तु अन्य निम्न- एंव मध्य-आय वर्गीय देशों की तरह भारत में भी, छोटे बच्चों के लिए पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों की सुविधा, इन विद्यालयों तक बच्चों की पहुँच, नामांकन की स्थिति व उनके लिए कुछ महत्वपूर्ण विकासात्मक कौशलों की वृद्धि जो आगे उनके विद्यालय के और दैनिक जीवन के लिए लाभकारी हैं पर बड़े पैमाने पर प्रमाण बहुत कम उपलब्ध हैं |

असर 2019 'अर्ली इयर्स' ऐसे कुछ प्रमाण एकत्रित करने का एक प्रयास है | 2019 में भारत के 24 राज्यों के 26 जिलों में आयोजित इस सर्वेक्षण में कुल 1,514 गांवों, 30,425 घरों, और आयु वर्ग 4-8 के 36,930 बच्चों को शामिल किया गया | इसमें सैम्प्ल्ड बच्चों के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय में नामांकन की जानकारी एकत्रित की गई और बच्चों ने संज्ञानात्मक विकास, प्रारंभिक भाषा और गणित, और सामाजिक और भावनात्मक विकास की कुछ गतिविधियाँ करी | हर गतिविधि बच्चों के साथ एक-एक करके उनके घर में की गई थी |

<u>असर 2019 'अर्ली इयर्स' के मुख्य निष्कर्ष:</u>

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय में नामांकन:

- असर 2019 के आंकड़े बताते हैं की 4-8 आयु वर्ग के 90% से अधिक बच्चे किसी प्रकार के शैक्षणिक संस्थान में नामांकित हैं | नामांकन में बच्चों की उम्र के साथ बढ़ोतरी देखी गई है | सैम्प्ल्ड जिलों में 4 वर्ष के 91.3% बच्चे और 8 वर्ष के 99.5% बच्चे नामांकित हैं |

- बच्चों की उम्र और नामांकन पैटर्न में यह विविधता भी देखी गई की एक ही उम्र के बच्चे विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक संस्थानों में नामांकित हैं | उदाहरण के लिए, 5 वर्ष के 70% बच्चे आंगनवाड़ियों या पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में हैं, लेकिन 21.6% बच्चे अभी से ही विद्यालय में कक्षा 1 में नामांकित हैं | 6 वर्ष के 32.8% बच्चे आंगनवाड़ियों या पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में हैं, 46.4% बच्चे कक्षा 1 और 18.7% कक्षा 2 या उससे आगे की कक्षाओं में हैं |

- इन छोटे बच्चों के बीच भी लड़कों और लड़कियों के नामांकन के पैटर्न अलग दिखे जिसमें लड़के निजी और लड़कियाँ सरकारी संस्थानों में ज़्यादा नामांकित हैं | उम्र के साथ यह अंतराल और बढ़ता जाता है | उदाहरण के लिए, 4 और 5

वर्ष के बच्चों में से, 56.8% लड़कियाँ और 50.4% लड़के सरकारी पूर्व-प्राथमिक या प्राथमिक विद्यालय में नामांकित हैं, जबकि 43.2% लड़कियाँ और 49.6% लड़के निजी पूर्व-प्राथमिक या प्राथमिक विद्यालय में नामांकित हैं | 6-8 वर्ष के बच्चों में, सभी लड़कियों में से 61.1% लड़कियाँ और सभी लड़कों में से 52.1% लड़के सरकारी पूर्व-प्राथमिक या प्राथमिक विद्यालय में नामांकित हैं |

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय जाने वाली आयु के बच्चे (4-5 आयु वर्ग):

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ यह सिफारिश करती हैं कि 4 और 5 आयु वर्ग के बच्चों को पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में होना चाहिए | इस आयु में बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशल जैसे संज्ञानात्मक कौशल, सामाजिक और भावनात्मक कौशल और साथ ही औपचारिक स्कूली शिक्षा के लिए आवश्यक conceptual foundation विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए |

- 5 वर्ष की आयु में हम बच्चों को जो सीखने का वातावरण देते हैं और जो उनसे अपेक्षा करते हैं, वह देश के राज्यों में विद्यालय में नामांकन के नियमअनुसार बहुत भिन्न है | इस कारण से एक 5 वर्ष का बच्चा क्या कर या सीख रहा है यह काफ़ी हद तक उस पर निर्भर है जहाँ वह रहता है | उदाहरण के लिए, केरल के थ्रिस्सूर ज़िले में सभी 5-वर्षीय बच्चों में से 89.9% बच्चे किसी प्री-प्राइमरी कक्षा में हैं और शेष सभी बच्चे कक्षा 1 में हैं | लेकिन मेघालय के ईस्ट खासी हिल्स में 65.8% बच्चे पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में हैं, 9.8% कक्षा 1 में हैं, और 16% कक्षा 2 में हैं। दूसरी ओर, मध्य प्रदेश के सतना ज़िले में 47.7% बच्चे पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में हैं, 40.5% कक्षा 1 में हैं, और 4.1% कक्षा 2 में हैं |

- बाल विकास विशेषज्ञ और अनुसंधान यह बताते हैं की 4 से 5 वर्ष में बच्चों में सभी कार्यों को करने की क्षमता में वृद्धि होती है | असर 2019 के आंकडें भी इसकी पुष्ठी करते हैं | किसी भी प्रकार के शैक्षणिक संस्थान में नामांकित बच्चे या अनामांकित बच्चे, दोनों में ही, 5 वर्ष के बच्चे संज्ञानात्मक विकास, प्रारंभिक भाषा, प्रारंभिक गणित और सामाजिक और भावनात्मक विकास के सभी कार्य 4 वर्ष के बच्चों से बेहतर कर पाते हैं | उदाहरण के लिए, सरकारी पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं (आंगनवाडी या सरकारी स्कूल में पूर्व-प्राथमिक कक्षा) में जाने वाले 4 वर्ष के 31% बच्चे और 5 वर्ष के 45% बच्चे एक 4-टुकड़ों का पज़ल सही बना पाते हैं |

- 5 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को उपर्युक्त अधिकांश कार्य आसानी से करने में सक्षम होना चाहिए | लेकिन उनका एक बड़ा अनुपात ऐसा करने में असमर्थ है | कम सुविधाओं वाले घरों के बच्चे असमान रूप से प्रभावित होते हैं | 4 वर्ष के सभी बच्चों में से लगभग आधे बच्चे और 5 वर्ष के सभी बच्चों में से एक चौथाई से अधिक बच्चे आंगनवाड़ियों में नामांकित हैं, लेकिन इन बच्चों में निजी LKG/UKG कक्षाओं में नामांकित बच्चों की तुलना में संज्ञानात्मक कौशल और बुनियादी क्षमताएं कम विकसित हैं |

- क्योंकि यह छोटे बच्चे हैं जो अपना अधिकांश समय घर पर बिताते हैं, इसलिए इनके विकास में अंतर कुछ घरेलू विशेषताओं के कारण हो सकता है | उदाहरण के लिए, 4-5 आयु वर्ग के उन बच्चों की आंगनवाड़ियों या सरकारी पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में नामांकित होने की संभावना अधिक है जिनकी माताओं ने आठ या उससे कम वर्षों के लिए स्कूली शिक्षा ली है | इसकी तुलना में 4-5 आयु वर्ग के उन बच्चों की निजी LKG/UKG कक्षाओं में नामांकित होने की संभावना अधिक है जिनकी माताओं ने आठ वर्षों से अधिक स्कूली शिक्षा पूरी की है |
- असर 2019 'अर्ली इयर्स' के आंकड़ों से पता चलता है की संज्ञानात्मक कौशल के विकास का प्रभाव बच्चों की प्रारंभिक भाषा और गणित के कार्यों को करने की क्षमता में भी देखा जा सकता है | इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों को पढ़ाते या सिखाते समय खेल-आधारित गतिविधियों पर ध्यान देने से बच्चों में सशक्त याद्दाश्त, तार्किक व रचनात्मक सोच, समस्या समाधान जैसे संज्ञानात्मक कौशलों का विकास होता है जो इस आयु में किताबी/विषय ज्ञान से अधिक लाभकारी है |

कक्षा 1 के बच्चे :

कक्षा 1 एक महत्वपूर्ण वर्ष है जब बच्चे पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं से बहार निकलकर पाठ्यक्रम की सभी अपेक्षाओं और विषय-केन्द्रित पढ़ाई के साथ, स्कूली शिक्षा शुरू करते हैं |

- RTE Act 2009 के अनुसार बच्चों को 6 वर्ष की आयु में कक्षा 1 में प्रवेश लेना चाहिए | लेकिन देश में कई राज्य 5+ वर्ष की आयु में भी बच्चों को कक्षा 1 में नामांकन की अनुमति देते हैं | कक्षा 1 में हर 10 बच्चों में से 4 बच्चे 5 वर्ष से छोटे या 6 वर्ष से अधिक आयु के हैं | कुल मिलाकर, कक्षा 1 में 41.7% बच्चे 6 वर्ष की RTE Act निर्धारित आयु के हैं, 36.4% 7 या 8 वर्ष के हैं और 21.9% 4 या 5 वर्ष के हैं।

- कक्षा 1 में नामांकित विभिन्न आयु के बच्चों में भी, बच्चों का संज्ञानात्मक विकास, प्रारंभिक भाषा और गणित और सामाजिक और भावनात्मक विकास आयु के साथ बढ़ता है | बड़े बच्चों का सभी कार्यों पर प्रदर्शन बेहतर दिखाई देता है | उदाहरण के लिए, कक्षा 1 के सभी बच्चों में, 4 और 5 वर्ष का कोई भी बच्चा कक्षा 1 के स्तर का पाठ नहीं पढ़ पता है |

- सरकारी विद्यालयों में कक्षा 1 में नामांकित बच्चों की आयु निजी विद्यालयों की कक्षा 1 की तुलना में कम है | सरकारी विद्यालयों में कक्षा 1 में नामांकित बच्चों में एक चौथाई से अधिक बच्चे 4 या 5 वर्ष के हैं (26.1%), जबकि निजी विद्यालयों के लिए यह अनुपात दस परसेंटेज पॉइंट कम है (15.7%)| दूसरी ओर, सरकारी विद्यालयों में कक्षा 1 में 30.4% छात्र 7-8 वर्ष के हैं, जबकि निजी विद्यालयों में यह अनुपात 45.4% है |

- जैसा कि 4 और 5 वर्ष के बच्चों के लिए देखा गया था, कक्षा 1 के बच्चों में भी संज्ञानात्मक विकास का प्रभाव बच्चों की प्रारंभिक भाषा और गणित करने की क्षमता पर दिखाई देता है | उदाहरण के लिए, कक्षा 1 में जो बच्चे 3 संज्ञानात्मक विकास के कार्य सही कर पाते हैं, वह अन्य बच्चों की तुलना में अधिक बुनियादी पढ़ने और मौखिक शाब्दिक सवाल हल करने के कार्य भी सही कर पाते हैं |

'अर्ली' प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे (कक्षा 1, 2, 3)

विद्यालय की शिक्षा के प्राथमिक वर्षों में बच्चों में पढ़ने और गणित करने की बुनियादी क्षमताओं को मजबूत करना चाहिए ताकि आगे की पढ़ाई व जीवन के लिए यह एक अच्छी नींव साबित हो सके | यह महत्वपूर्ण है कि पाठ्यक्रम और कक्षा में की जाने वाली गतिविधियाँ इस प्रगति को ध्यान में रखते हुए विकसित की जाएँ |

- असर 2019 के आंकड़े दिखाते हैं कि अलग-अलग आयु के सबसे अधिक बच्चे कक्षा 1 में नामांकित हैं और यह भिन्नता हर अगली कक्षा के साथ कम होती जाती है | इसके साथ ही सभी कक्षाओं में सर्वेक्षण के सभी कार्यों में बड़े बच्चे अपनी कक्षा के छोटे बच्चों से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं | उदाहरण के लिए, हालांकि कक्षा 3 तक दोनों सरकारी और निजी विद्यालयों में अधिकांश बच्चे 7 या 8 वर्ष के हैं, लेकिन कक्षा 3 में 8 वर्ष के बच्चों में से 53.4% कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, वहीँ इसी कक्षा के 7 वर्ष के बच्चों में से 46.1% बच्चे ऐसा कर सकते हैं |

- बच्चों के कौशल और उनकी क्षमताएँ हर कक्षा में सुधरती हैं | लेकिन हर कक्षा के साथ बड़े तौर पर बढ़ती पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं के कारण कक्षा 3 तक आते वह बच्चे पीछे रह जाते हैं जिनकी बुनियादी पढ़ने व गणित करने की क्षमताएँ कमज़ोर हैं | उदाहरण के लिए, बच्चों की कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ने की क्षमता कक्षा 1 से 3 तक सुधरती है – कक्षा 1 में 16.2% बच्चे यह पाठ पढ़ पाते हैं और कक्षा 3 में 50.8% | ध्यान देने की बात यह है की कक्षा 3 के लगभग आधे बच्चे जो यह पाठ नहीं पढ़ पाते हैं, वह पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं से अब दो वर्ष पीछे हो गए हैं |

- इसी तरह, कक्षा 1 में 41.1% बच्चे 2 अंकों की संख्या को पहचान सकते हैं, जबकि कक्षा 3 में 72.2% बच्चे ऐसा कर सकते हैं | लेकिन NCERT के सीखने के परिणामों (लर्निंग आऊटकम्स) के विनिर्देश के अनुसार, बच्चों को कक्षा 1 में 99 तक संख्याएँ पहचानने में सक्षम होना चाहिए |

- पहले की तरह, इन बच्चों में भी इनके प्रारंभिक भाषा और गणित प्रदर्शन पर इनके संज्ञानात्मक कौशल का प्रभाव दिखाई देता है | उदाहरण के लिए, कक्षा 3 में जो बच्चे 3 संज्ञानात्मक कार्यों को सही कर पाए, उनमें से 63.2% बच्चे कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ने में सक्षम थे | इसकी तुलना में, जो बच्चे संज्ञानात्मक विकास के कार्यों में एक या एक भी कार्य सही करने में सक्षम नहीं थे, उनमें से 19.9% बच्चे ही कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ पाए |

नीति निहितार्थ (policy implications)

असर 2019 'अर्ली इयर्स' के निष्कर्षों से तीन प्रमुख निहितार्थ निकलते है:

- आंगनवाडीयाँ बहुत बड़े अनुपात में छोटे बच्चों के लिए पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में जाने से पहले से उन्हें विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध कराती हैं | इन आंगनवाडीयों को सभी बच्चों को शामिल करने और 3 और 4 वर्ष के बच्चों के लिए उपयुक्त स्कूल रेडीनेस गतिविधियों, कार्यक्रम का संचालन करने के लिए और सशक्त बनाना चाहिए |

- असर 2019 'अर्ली इयर्स' के आंकड़ों से दिखता है कि संज्ञानात्मक विकास, प्रारंभिक भाषा और गणित और सामाजिक और भावनात्मक विकास में बच्चों के प्रदर्शन पर उनकी आयु का भी प्रभाव है, इसलिए बड़े बच्चे छोटे बच्चों की तुलना में अधिक सवाल सही हल कर पाते हैं | कम आयु के बच्चों को विद्यालय में नामांकित कर प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने से उन्हें नुक्सान पहुँचता है जिसे दूर करना मुश्किल होता है |

- असर 2019 के आंकड़ों से बच्चों के प्रारंभिक भाषा और गणित के प्रदर्शन पर उनके संज्ञानात्मक कौशल का प्रभाव दिखाई देता है | इससे यह संकेत मिलता है कि प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को सिखाने में संज्ञानात्मक कौशल के विकास पर ध्यान देना चाहिए नाकि किताबी, विषय-आधारित ज्ञान पर जिससे बच्चों को भविष्य में भरपूर लाभ हो सके | 4-8 आयु वर्ग को एक साथ एक continuum के रोप में देखना चाहिए और कक्षा व पाठ्यक्रम का निर्माण इसको ध्यान में रखकर करना चाहिए | एक प्रभावी पाठ्यक्रम बनाने के लिए उसके डिज़ाइन, प्लानिंग, पायलटिंग, आदि को ज़मीनी हकीकत को ध्यान में रखना चाहिए |

For more information contact:

Ranajit Bhattacharyya
Email: ranajit@asercentre.org
Mobile: 9971137677